CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. I
Octomber 2019

Peer Reviewed
SJIF

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

October 2019 Special Issue- 20 Vol. I

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श
Indian Society & Ideology of Disability

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Associate Editor
Dr. S.A. Wadchkar

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. I Octomber 2019	Peer Reviewed SJIF	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

डॉ. राजाराम झोडगे
17. अपंगाच्या विकासातील शासकीय योजना 81
डॉ. वितेश भारत निकते
18. भारतीय मतीमंदात्वाची स्थिती 84
प्रा. डॉ. प्रकाश रावसाहेब शिंदे
19. अपंग व्यक्ती व शासनाची भूमीका व कार्य 87
प्रा.डॉ.अंभुरे एस.डी
20. सोशल मिडिया आणि फेकु न्युज 90
प्रा.डॉ. आंधळे बी. व्ही,
21. Disability & Literature 92
Dr.Meena Surendra kadam
22. Differently Abled & Their Inclusion 96
K.Saideepti
23. Disability : A Curse On Human Life 101
Bais Sunita Manoharrao
24. Disability Divided in India 107
Dr.Bhavna H. Parmar
25. The Implications of Socioeconomic Perception Of Disability in Ahmedabad 113
Varma Kirankumari
26. Portrayal of Disabled in Rohinton Mistry's *Such a Long Journey* (1991) 121
Mr. Rajesh S. Gore , Dr. Vasant .D. Satpute
27. Psychological Disorder in Rohinton Mistry's *Such a Long Journey* 129
Dr. Jaybhaye Vithal K.
28. ICT Facilities and Services for Visually Challenge 134
DR. ANANT B. SARKALE
29. Diability and Psychology 137
Dr. Shinde Manik Panditrao
30. हिंदी कविता में विकलांगता बोध 139
डॉ.अविनाश व.कासांडे
31. अपंगाचे कल्याण- एक सामाजिक दायीत्व 143
प्रा.डॉ. शिवाजी धोंडीबा दहिकांबळे
32. ''हिंदी कविता में विकलांगता बोध'' 146
प्रा.भेंडेकर एन.एस.
33. हिंदी की महिला साहित्रकार शिवानी के कहानिरों में चित्रित विकलांग विमर्श 152
प्रा.डॉ.डमरे मोहन मुंजाभाऊ
34. विकलांग विमर्श : स्वरूप एवं अवधारणा 158
प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
October 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

"हिंदी कविता में विकलांगता बोध"

प्रा.भेंडेकर एन.एस.

हिंदी विभाग,कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड ता. गंगाखेड जि. परभणी (महा)

वेदना तथा संवेदना का संबंध व्यक्ति की निजी अनुभूतियों से होता है। ठीक उसी प्रकार दिव्यांग की वेदना भी। विज्ञान की दृष्टि से वेदना तथा संवेदना की अनुभूति विभिन्न प्रकार की ग्रंथियों, कोशिकाओं पर निर्भर करती है किंतु वे कोशिकाएँ या ग्रंथियाँ कार्य करना ही बंद करे तो...? व्यक्ति की संवेदन अनुभूति ही काम करना बंद करे तो...? यकिनन एक भयावह प्रश्न उपस्थित हो जाता है। आज समाज में अनेक प्रकार के दिव्यांग पाये जाते हैं, जिनमें प्रमुखतः मनोरूग्ण, अपाहिज, अंधे, गूँगें, बहरे आदि। इसके साथ–साथ आधुनिक युग की तेज रफ्तार में लोगों की दौड़, उन्हें किस दिशा में ले जा रही है, दिनभर की भागदौड़ में आज उसे खाने के लिये भी समय नहीं मिल पाता। ऐसी स्थितियों में असर तो सेहत पर पडता ही है और वे विविध प्रकार की बिमारियों के शिकार भी बनते हैं, तो कुछ अलग–अलग प्रकार के हादसों के शिकार बनते हैं। जिस कारण सुदृढ़ व्यक्ति अपाहिज बनता है।

समाज में जीवन यापन करते समय हमें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। व्यक्ति इन समस्याओं से झुजते हुये आगे की ओर अपना सफर तय करता है। दुसरे शब्दों में कहा जाये तो संघर्ष ही जीवन का दुसरा नाम है, किंतु जब हम किसी की जान–बुझ कर अवहेलना करते हैं तो व्यक्ति जीन कठिन यातनाओं से गुजरता है, यह वही बता सकता है, जिस पर बीती हो। वैसे देखा जाये तो मानव समाज में अनेक प्रकार के विकलांग लोग दिखाई देते हैं। इनमें प्रमुखतः मानसिक रूप से विकलांग तथा शारिरीक रूप से विकलांग इन दो भागों में विभाजन कर सकते हैं। इसके साथ–साथ एक तिसरा रूप भी देखा जा सकता है, जिनमें वे लोग शामिल होते हैं, जो न शारिरीक तथा मानसिक रूप से विकलांग होते हैं। ऐसे लोग समाज को खोकला करने में किसी प्रकार की कमी नहीं छोडते।

समान्यतः हम विकलांग उन लागों को कहते है जो, अंग से हीन हो अथवा जिसका कोई अंग काम न करता हो। अर्थात सामान्य शब्दों में कहा जाये तो निर्योग्यता। इसी निर्योग्यता को इस प्रकार से स्पष्ट किया गया है–"निर्योग्यता एक व्यापक शब्द है, जो किसी व्यक्ति के शारिरीक, मानसिक, ऐन्द्रिक, बौद्धिक विकास में किसी प्रकार की कमी को इंगीत करता है। इसके लिये 'अशक्तता', 'निःशक्तता', 'अपंगता' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।"[1] हमारे भारत के संविधान ने भारत के सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता, न्याय तथा गरिमा सुनिश्चित की है और स्पष्ट रूप से यह विकलांग व्यक्तियों के साथ एक संयुक्त समाज बनाने पर बल देता है।

Special Issue XX , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

वैसे देखा जाये तो विकलांग, विकलांग के रूप में जीवन न जिये इसके लिये हमारी भारत सरकार की ओर से भरसक प्रयास किये जा रहे हैं। विकलांगों को अनेक प्रकार की साधन सुविधायें उपलब्ध कराकर उनके जीवन में उत्पन्न अभाव को कम करने का प्रयास किया जा रहा है किंतु ऐसा होते हुये भी विकलांगों की ओर समाज का देखने का जो दृष्टिकोण है, वह निश्चित ग्लानी उत्पन्न कराता है। आज भी समाज जीवन में आँख से अंधे को– सूरदास, पैर से अपाहिज को– लंगड, हाथ से अपाहिज को–लुला, एक आँख से अंधे को–काना, कान से न सुनाई देने वाले को–बहरा, पीठ से अपाहीज को– कुब्जा आदि कई प्रकार के नामकरण हुये हैं। जो विकलांगों के लिए एक विशेष प्रकार के संबोधन बन चुके हैं। यह विशेष प्रकार के संबोधन वह समाज हमें प्रदान करता है, जिसे हम स्वस्थ–सुदृढ तथा सशक्त कहते हैं। यहाँ पर दोष देखने वालों की दृष्टि का है। यदी किसी अपाहिज को हम उसके शारिरिक व्यंग्य को परिलक्षित कर संबोधित करते हैं, तो निश्चित ही उसपर क्या बीतती होगी वह वहीं जाने। इस दृष्टि से देखा जाये तो तिसरा प्रकार इन जैसे लोगों का-हैं, जो अपाहिज लोगों को व्यंग्यात्मक रूप से जान बुझकर संबोधित करता है। ऐसी स्थितियों का परिणाम यह होता है कि, शारिरीक रूप से अपाहिज व्यक्ति अपना नाम होते हुये भी, उसे एक नया नाम धारण करना पड़ता है जो उसकी पहचान ही बन जाता है। ऐसी स्थिति के कारण हम अपने ही लोगों की उर्जा, मनोबल, विश्वास, तथा उनकी ताकत को कम करने में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ते।

समाज जीवन को अगर गौर से देखा जाये तो, यह स्पष्ट रूप से हमें ज्ञात होता है कि, जिन लोगों ने अपने शरिर का एखाद अवयव किसी कारणवश खो दिया हो उसमें एक ऐसी विशेष प्रतिभा को परिलक्षित कर सकते हैं, जिससे वह अपने व्यंग्यत्वपर आसानी से विजय प्राप्त कर ले। आँख से अंधा किन्तु उसकी सुनने की शक्ति सामान्य से कई गुना तेज, पैर से अपाहिज पर अपने हाथों से कई प्रकार की विशेष प्रतिभा को ग्रहण करने वाला आदि कहने का तात्पर्य यह की अपाहिज लोगों में भी एक विशेष प्रकार की प्रतिभा विकसित होती है, जो उनके विकलांग रूप पर विजय प्राप्त करती है। किसी की आवाज सुरीली, तो किसी के हाथों की कलाकारिता, कोई पेंटर, कोई तिक्ष्ण बुद्धिमत्तावाला, तो कोई अनेक कलाओं में निपुण। अपाहिज लोगों की ऐसी खुबियों को हम नजर अंदाज क्यों करते हैं? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित होता है। वे भी आम इन्सान की भाँति जीवन जी सकते हैं। उनको भी सामान्य तरिके से जीवन जिने का अधिकर है। फिर भी हम उनकी शारीरीक विकलांगता को इंगित कर उसे लक्ष्य करने में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ते। हमारी नजर में तो यह तिसरे प्रकार के लोग ही सबसे अधिक विकलांग है, जो न खुद सही तरीके से जीवन जिते है और न ही विकलांगों को कोसने से बाज आते हैं।

हिंदी साहित्य की दृष्टि से देखा जाये अनेक साहित्यकारों ने ऐसी स्थितियों को अपने साहित्य में उतार कर विकलांगों के प्रति देखने की हमारी जो दृष्टि है, उसे बदलने के प्रयास किये हैं। सुर्यकुमार पांडेय की कविता 'विकलांग बच्चों के गीत' में विकलांग बच्चों की प्रबल

Special Issue XX , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
October 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

इच्छाशक्ति और उनमे निहित प्रेरणा तथा उनकी बदलती धारणा को कुछ इस प्रकार स्पष्ट किया है–

हाथ नहीं पर
हम लिख सकते एक नयी गाथा
जिसके आगे बड़ों–बड़ो का
झुक जाए माथा। बाँहो में वह दम।
हम हैं किससे कम
बोलो, हम हैं किससे कम!''

यह स्पष्ट है कि, जिन बच्चों के हाथ नहीं होते वे भी किसी से कम नहीं होते। उन्हें चाहिये एक अवसर जो कि उन्हे निखरने के लिए महत्वपूर्ण हो। जिन विकलागों को हमारा समाज हाशिए तक सीमित रखता है, अब वे भी विकास की यात्रा में अपना योग देना चाहते हैं, दे रहे है। उन्हें तो तलाश है बस एक अवसर की, जो बिना किसी के आगे झुके सीना तान कर यह सिद्ध कर सके की, 'हम किसी से कम नहीं।

हमें अपने नजरिये में बदलाव की आवश्यकता है। जब तक हम विकलांगों को प्रेरित नहीं करेगे तब तक वे मुख्य प्रवाह में कितनी मात्रा में आ पायेंगे यह भी विचारणीय प्रश्न है। कई बार विकलांगो मे एक प्रकार का अवसाद या निराशा उनके मन में इस प्रकार घर कर लेती है कि, वे उससे उभर पाना न के बराबर होता है। ऐसी स्थिति में हम सामान्य जनों का कर्तव्य बन जाता है कि, उन्हे प्रेरित करे, निराशा से उत्पन्न उनके जीवन को नई रोशनी से भर दे। एक स्थान पर कमलेश कुशवाह इसी प्रकार की प्रेरणा देते हुये कहते हैं–

''बढते चलो तुम बढते चलो
विकलांग हो भले ही तुम बढ़ते चलो
बोझ कोई तुम्हे समझता
बोझ ना हो तुम किसी पर
बढ़ते चलो तुम बढते चलो।''

मानव जीवन का झुकाव सुंदरता की ओर अधिक है। व्यक्ति का रखरखाव उसकी देह बोली, चाल–चलन, रूप–रंग, नाक–नक्षा आदि की ओर हम प्राथमिकता देते है। बच्चें हो या बडे या हो बुजूर्ग हम सुंदरता को अंदेखा नही कर सकते। किंतु जहाँ तक व्यंग्य या विकलागता की बात है तो हमारा नजरीया कुछ हद तक बदल जाता है। कुरूपता युक्त शारिरिक व्यंग्य वाला व्यक्ति हो या बच्चा आम तौर पर उसकी ओर हम देखना भी नही चाहते, उसके प्रति घृणा करते है। चेहरे की सुंदरता हमे अधिक आकर्षित करती है, तो कुरूपता हमें कई दूर तक ले जाती है वास्तवतः चेहरे की सुंदरता से कई गुना अधिक अच्छी होती है मन की सुंदरता। रैदास ने भी एक स्थान पर कहाँ है– 'मन चगा तो कठौती मे गगा'। अर्थात हमारा मन अगर साफ–सुथरा हो तो हमें विराने में भी सुंदरता का आभास होता है, रेगिस्तान भी सुहावना लगता है किंतु मन ही साफ

नही तो हरीभरी प्रकृति भी हमें रूक्ष लगने लगती है। जिस प्रकार विरहाकुल मन की आशा में सावन में भी लुँ की लपेटे हमे घेर लेती है। ठीक वैसे ही विकलांगों के प्रति हमारा देखने का नजरिया हमें पहले बदलना होगा, तब जा कर वे मुख्य प्रवाह में शामिल हो, अपना हुनर, अपनी प्रतिभा को दिखाने में सफल हो सकते हैं। एक स्थान पर कवि ने कहा है–

"हमें कुरूप
समझने वालो, क्या यह नहीं पता,
मन की सुंदरता होती है
सच्ची सुंदरता। तोडे सभी भरम।
हम हैं किससे कम
बोलो, हम हैं किससे कम।"

आज विज्ञान ने बहुत तरक्की की है। जिसके चलते इंसान उसका उपयोग अनेक विधायक कार्यों के लिये करता हुआ दिखाई देता है। विज्ञान ने जिस प्रकार विकास के नये रास्ते जन–सामान्यों के लिये खोल दिये, ठिक उसी प्रकार इंसान इसी विज्ञान का प्रयोग अपने स्वार्थ के लिये भी करता हुआ दिखाई देता है। 'सोनोग्राफी' यह विज्ञान का ही खोज है, जिसके प्रयोग से हम नये आनेवाले शिशु की सेहत, तंदुरूस्ती आदि का पता आसानी से लगा सकते हैं। पर इसका प्रयोग आज विधायक कार्य के स्थान पर स्वार्थपुर्ति हेतु आम तौर पर लोग करते हैं। स्त्री के पेट में पल रहा शिशु का लिंग निदान इसके साथ साथ उसमें किसी प्रकार की कमी तो नहीं, अगर कमी है या व भ्रूण लड़की है तो हम उसे इस संसार में आने से पूर्व ही समाप्त कर देते हैं। ऐसी ही भयावह स्थिति को रेखांकित करती 'एक सवाल' इस कविता में कुछ इस प्रकार स्पष्ट किया गया है–

"क्या
विकलांग जीवन को
हम मार देते हैं
जन्म से पहले ही
कोख में ?"

सामान्यतः व्यक्ति जीवन में निराशा का आना अर्थात हमारा विकास कुंठित होना यह तो स्पष्ट है। सार्वसामान्य तरिकों से जीवन–यापन करने वालों के जीवन में यदि निराशा या अवसाद के क्षण आये तो वह विवेक शून्य बन जाता है। कोई भी कार्य वह परिपूर्ण रूप से सफलता पूर्वक नहीं कर पाता। ऐसे में हम जरा सोचकर देखे कि अगर अपाहिज लोगों के जीवन में उनकी विकलांगता के कारण अगर निराशा उत्पन्न हो जाय तो ? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। अतः ऐसे लोगों के जीवन में नई स्फूर्ति, नयी प्रेरणा तथा जीवन में नये संचार का होना परम आवशक हो जाता है। मानसिक रूप से विकलांग हो या शारिरीक रूप से विकलांग व्यक्ति हो उनमें एक नयी

Special Issue XX , Vol. I | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
October 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

उर्जा, नई प्रेरणा हमेशा बनाये रखना परम आवशक होता है। ऐसे ही प्रेरणा का संचार करते हुये सुशिल कुमार शर्मा अपनी कविता 'आगे बढ़ो...' में कुछ इस प्रकार कहते हैं–

"जीवन के दृष्टिकोणों को,
आज नया आयाम मिले।
सोच सकारात्मक हो तो,
मन को पूर्ण विराम मिले।
हिम्मत कभी न हारो मन की,
स्वयं पर अटूट विश्वास रखो।
मंजिल खुद पहुँचेगी तुम तक,
मन में सोच कुछ खास रखो।"

वर्तमान समाज में हर एक माता–पिता की एक इच्छा होती है कि, अपना बच्चा अपने पैरों पर खड़ा हो। वे उसे अपने पैरों पर खडा करने के लिए जी–जान लुटा देते है किंतु बच्चा अपने पैरों पर खड़ा होना तो दूर वह अपने माँ–बाप के सिर का दर्द बनकर ऊभरता है। कोई गलत संगत में पड़कर अपने साथ अपने परिवार का भविष्य दाँव पर लगाता है, तो कोई किया कराया सब चौपट कर देता है। जिनको हम अपने पैरों पर खड़ा करने का प्रयास करते हैं, उनका ही सहारा हमें बुढापे में बनना पड़ जाता है। यह एक युवा पीढ़ी की विड़ंबना ही तो है। दुसरी ओर वे बच्चे भी है, जिनके वास्तविकतः पैर ही काम नहीं करते। वे बच्चे अपनी प्रबल इच्छाशक्ति के सहारे स्वयं तो सक्षम बनते ही हैं किंतु अपने परिवार को भी सक्षम बनाने में अपना योग प्रदान करते हैं। ऐसे ही अपाहिज बच्चों की मानसिकता को लेकर कवि लिखते हैं–

"पाँव नही, लेकिन
अपने पैरों पर हम खड़े हुए,
हर मुश्किल आसान बनाकर
इतने बड़े हुए। आगे बढ़े कदम।
हम हैं किससे कम।
बोलो, हम हैं किससे कम!"

आज समाज में विकलांगों की मात्रा दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। इसके लिये हम ही जिम्मेदार है। क्यों कि आज हम जिस प्रकार का अनाज, सब्जी सेवन करते हैं उनमें रोग प्रतिकारक शक्ति के स्थान पर जहर की ही मात्रा अधिक पायी जाती हैं। आज हम ऐसे अनाज की पैदावार में जुटे हैं, जो आमदनी को अधिक बढ़ाये। इस चक्कर में हम कितनों की जान के साथ खिलवाड कर रहे हैं; इस बात का हमें अंदाजा भी नहीं हैं। खान–पान की चिजों से लेकर हममें सतर्कता का अभाव प्रायः दिखाई देता है। जिसका सीधा प्रभाव आनेवाली पीढ़ी पर पड़ता है। नई पीढ़ी में अनेक प्रकार की बिमारियाँ कम आयु में पायी जाने लगी हैं। शुगर और बी.पी. जैसी बिमारियाँ तो अब नई पिढ़ी के लोगों में आम हो गयी हैं। इसके साथ–साथ 'पॅरालिसिस'

जैसी बिमारियाँ हट्टेकट्टे आदमी को भी विकलांग बना रही है। संतुलित तथा पोषक भोजन के अभाव में कई बच्चें जन्म लेते ही किसी–न–किसी बिमारी का शिकार बनते जा रहे है, या फिर उनमें जन्म से ही कोई अपंगत्व निर्माण हो रहा है। पोषक आहार के साथ लोगों में पायी जाने वाली व्यसनाधिनता भी एक यहाँ पर प्रमुख कारण है। जिसके चलते उनके परिवार में आनेवाली नई पीढ़ी में व्यंग्यत्व को पाया जाना एक सामान्य बात बन गयी है।

आज हमारी सरकार व्यसनाधिनता की रोकथाम के लिये अनेक प्रकार के प्रयास कर रही है। पर उन प्रयासों को सफलता कितनी मात्रा में मिल रही है ? यह एक गंभीर प्रश्न है। जब तक हमारी मानसिकता में बदलाव नहीं होंगे तब तक व्यसनाधिनता से हम मुक्त हो पायेंगे ही यह कहना मुश्किल है। ऐसी भयावह स्थितियों से नई पीढ़ि को बचाने के लिये हम अगर अभी सतर्क नहीं हुये तो निश्चित रूप से अनेवाली पीढ़ियों में तंदुरूस्ती तो नाम मात्र रूप में देखने को मिलेगी, अधिक मात्रा होगी अनेक प्रकार के विकलांगों की। जिनमें कोई मानसिक रूप से तो कोई शारिरिक रूप से विकलांग होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। ऐसी भयावह स्थिति का सामना करने के बजाय हमें आज ही सतर्क होने की आवश्यकता है।

संक्षेप में हम विकलांगता और हिंदी कविता के संदर्भ में इतना ही कह सकते हैं कि, हिंदी साहित्य में विकलांग विमर्श पर अनेक साहित्यकारों ने प्रकाश डालने का प्रयास किया है। जिससे हम विकलांगो की स्थितियों से रूबरू हो सकते हैं। पर महत्वपूर्ण प्रश्न यह हैं कि, हमें विकलांगों के प्रति देखने के हमारे दृष्किोण को बदलना परम आवश्यक है। उनमें एक नयी प्रेरणा तथा उमंग का संचार कर उनको मुख्य प्रवाह से जोडे रखना तथा उन्हें विविध प्रकार के अवसर प्रदान कर नई उमंग के साथ जिवन जिने के लिये प्रेरित करना हमारा परम कर्तव्य ही नहीं अपितु दायित्व भी है। जिससे वें भी समाज विकास में अपना योग आसानी से दे सके।

संदर्भ:–

[1] https://hi.wikipedia.org/wiki/निर्योग्यता– दि. १३/०८/२०१९
[2] http://kavitakosh.org/kk/ विकलांग बच्चों के गित– सुर्यकुमार पाडेय– दि. १३/०८/२०१९
[3] http://www.mehtvta.com/poem-handicapped-hindi/ दि. २१/०८/२०१९
[4] http://kavitakosh.org/kk/ विकलांग बच्चों के गित– सुर्यकुमार पाडेय– दि. १३/०८/२०१९
[5] http://creative.sulekha.com/ek-sawaal-ek-kavita-hindi_47455_blog dt 21/08/2019
[6] https://hindi.webdunia.com/hindi-poems/poem-on-life-117081600040_1.html dt 13/08/2019
[7] http://kavitakosh.org/kk/ विकलांग बच्चों के गित– सुर्यकुमार पाडेय– दि. १३/०८/२०१९